SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

May 2022 Special Issue 05 Volume IV

अनुवाद का महत्त्व एवं सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

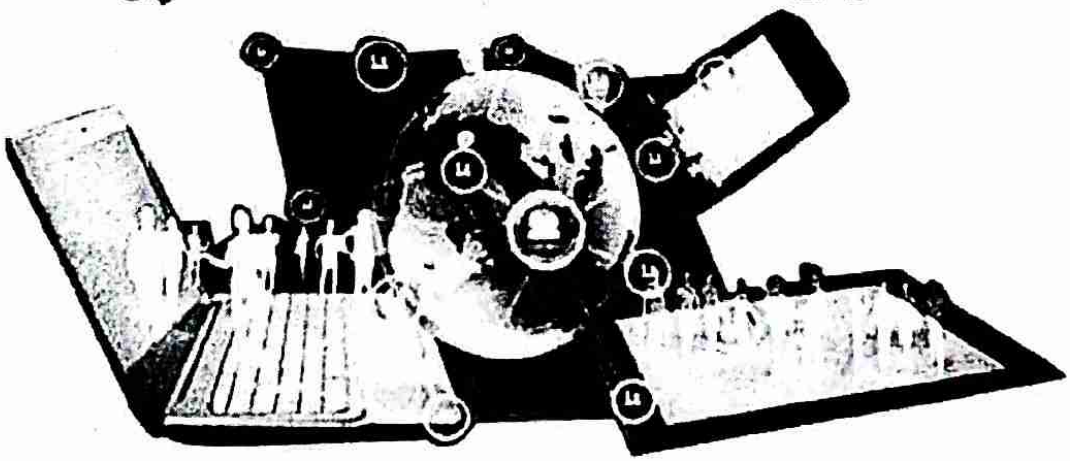

- अतिथि संपादक -

प्रो.डॉ. प्राजक्ता प्रकाश जोशी
संयोजक

प्रा.डॉ. राजेंद्र कैलास वडजे
सहसंयोजक

ए.आर. बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय,सोलापुर

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.almrj.com

Akshara Publication

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

May 2022 Special Issue 05 Volume IV SJIF Impact 5.54

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli

Dongar Kathora

Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** *Assistant Professor,* Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Chantharangsri Phrakhrusangkharak Yanakorn,** Assistance Professor Songkhla,Thailand
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
May 2022 Special Issue 05 Volume IV

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

May 2022

Special Issue 05 Volume IV

अनुवाद का महत्त्व एवं सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

अतिथि संपादक

प्रो.डॉ.प्रावक्का प्रकाश जोशी
संयोजक
ए. आर. वुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय, सोलापुर

प्रा.डॉ.राजेंद्र कैलास वडवे
सहसंयोजक
ए. आर. वुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय, सोलापुर

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony.
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
May 2022 Special Issue 05 Volume IV
E- ISSN 2582-5429
SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	अनुवाद : समस्याएँ और समाधान	प्रो.बिराजदार गंगाधर पुळप्पा	05
2	अनुवाद और वाक्य विज्ञान	प्रा. नवनाथ जगताप	08
3	कार्यालयीन हिंदी अनुवाद	प्रा.डॉ.पंडित बन्ने	11
4	कार्यालयीन अनुवाद	डॉ. अशोक मर्डे	15
5	अनुवाद के प्रकार	प्रा. डॉ. कदम एस.एस.	18
6	अनुवाद की उपयोगिता और प्रासंगिक भूमिका	प्रा. डॉ.शिवाजी उत्तम घवरे	21
7	अनुवाद का महत्व	प्रीती यादव	25
8	अनुवाद : संकल्पना और स्वरूप	प्रा. डॉ. राजेंद्र कैलास वडजे	27
9	हिंदी अनुवाद का महत्व	डॉ. सतीश अर्जुन पोपळे	30
10	हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की उपयोगिता	प्रा. डॉ. सुनंदा मोहिते	33
11	अनुवाद परंपरा एवं सैद्धांतिक पक्ष के विभिन्न आयाम	प्रा. निवृत्ती लोखंडे	35
12	अनुवाद : स्वरूप, महत्व और उपयोगिता	डॉ. अलका निकम-वागदरे	39
13	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	डॉ. अनिल प्रभाकर कांबळे	41
14	अनुवाद : आधुनिक युग की अनिवार्यता	प्रा.डॉ. रजनी जे. दळवी	46
15	*साहित्येतर साहित्य का अनुवाद*	*डॉ. श्रीराम हनुमंत वैद्य*	50
16	अनुवाद : स्वरूप एवं समस्याएँ	प्रा. रज्जाक शेख	54
17	हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की उपयोगिता	डॉ. दरेप्पा मल्लिनाथ बताले	57
18	हिंदी अनुवाद की समस्याएँ	डॉ. संगीता राहुल यादव	60
19	अनुवाद : एक सैध्दांतिक अध्ययन	काकडे संतोष सुंदरराव डॉ. राजेन्द्र कैलास वडजे	62
20	अनुवाद का महत्व	प्रा. डॉ. शंकर शिवाजी राजे	67
21	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व	प्रा. धन्यकुमार बिनपाल बिराजदार	69
22	अनुवाद : संकल्पना और स्वरूप	लतिका मोहन काटे	71
23	हिंदी अनुवाद का महत्व	अमोल पाटील	73
24	अनुवाद की समस्या	श्री.कैलासकुमार गुंडोपंत पाटील	75
25	हिंदी के विकास में अनुवाद की भूमिका	डॉ.अनंत वडघणे	76
26	अनुवाद : स्वरूप और संकल्पना	प्रा.व्ही.एच.वाघमारे	79
27	जनसंचार माध्यम और हिंदी	डॉ. फैमिदा शब्बीर बिजापूरे	81
28	हिंदी भाषा और संगणक युग	डॉ. सुभाष नामदेव जाधव	85
29	जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा का महत्व	डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानमारे	89
30	जनसंचार माध्यम और भारतीय संस्कृती	प्रा. डॉ.स्वाती घाटुळे	95
31	आधुनिक और उच्च तकनीकी विज्ञान का आविष्कार	प्रा.डॉ.सी.वी.कदेकर	96
32	हिंदी भाषा और संचार माध्यम	डॉ. सौदागर साळुंके	99
33	सूचना - प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा का विकास	प्रा.सिद्धाराम पाटील	102
34	हिंदी प्रचार-प्रसार में सिनेमा की भूमिका	डॉ. रेशमा एस. नदाफ	105
35	सूचना प्रौद्योगिकी : स्वरूप एवं महत्व	डॉ. प्रकाश विठ्ठल शेट	108

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

May 2022 Special Issue 05 Volume IV SJIF Impact: 6.45

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No.
36	हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट की भूमिका	प्रा.रेशमा गणेश लोंढे	109
37	कंप्यूटर संचार और हिंदी	श्री. साहेबलाल पी. शरफ	112
38	हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान	श्री किशोर श्रीमंत ओव्हळ	117
39	हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट की भूमिका	प्रा.डॉ.आयमबेग मिर्ज़ा राहिला मिर्ज़ा	120
40	हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट की भूमिका	डॉ.उत्तम गजानन आलतेकर.	123
41	साहित्य में परिकल्पना	नवल माळी	125
42	हिंदी के प्रचार प्रसार में सिनेमा की भूमिका	प्रा.डॉ.ममता लक्ष्मीनारायण सोळंकी	126
43	हिंदी प्रचार–प्रसार में सिनेमा की भूमिका	श्री पवन देशमुख	128
44	हिंदी के प्रचार - प्रसार में सिनेमा की भूमिका	गणेश महादेव पांचाळे प्रो. डॉ. जी. डी. चिंडाळकर.	135
45	सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा का वर्तमान और भविष्य	डॉ.विजय सदामते	137

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
May 2022 Special Issue 05 Volume IV
SJIF Impact- 5.54

40

हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट की भूमिका

डॉ.उत्तम रघाराम आवळेकर
प्रा.सभाजीराव कदम कॉलेज, देऊर, ता.कोरेगाव, जि.सातारा (महाराष्ट्र)

आज इक्कीसवी सदी के समाजिक परिवर्तन में अनेक साधनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इक्कीसवी सदी के आधुनिक साधनों के कारण ही जागतिक संबंध प्रस्थापित रुप में स्थापित हो रहे है। किसी दूरस्थित व्यक्ति से संपर्क करने, अपना संदेश दूरस्थित व्यक्ति को पहुँचाने, जमाने के स्वरूप को तेजी से बदलने के लिए मानव द्वारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण और पेचीदा आविष्कार अगर कौनसा है तो वह इंटरनेट है। इंटरनेट सूचना प्रौदयोगिकी का एक ऐसा अविष्कार है जो व्यक्ति को किसी भी विषय की जानकारी तत्काल करा सकता है। शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, सूचनाओं के आदान-प्रदान सामाजिक संबंध स्थापित करने जैसे अनेक कार्यों को आसानी से कर सकता है। वास्तव में इंटरनेट संबंधि यह कह सकते है कि, इंटरनेट मनुष्य का सबसे बड़ा समूह है और इसका कोई भी इंचार्ज या प्रभारी नही है। और यह एक स्वतंत्र प्रणाली है तथा सूचनाओं से मुक्त है।

इंटरनेट सामान्य तौर पार कम्प्युटर के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप को परिभाषित करता है। साथ ही इसके माध्यम से सर्वाधिक विविध स्रोतों से सूचनाओं तक पहुँचा जा सकता है। आज के इक्कीसवी सदी में ज्ञान पर आधारित समाज का निर्माण करने मे इस सूचना प्रौद्योगिक के प्रमुख दावेदार इंटरनेट की जिम्मेदारी बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। इंटरनेट की लोकप्रियता दिनोंदिन तेजी से बढ़ने का कारण अगर कौन सा है तो वह है सूचनाओं के मुक्त प्रवाह और ज्ञान में हिस्सेदारी। स्पष्ट है कि आज की दुनिया में सबके साथ कदम-से-कदम मिलकर चलने के लिए विश्वभर में फैले नैटवर्क के साथ जुड़ा इंटरनेट अपरिहार्य हो गया है। अपने रहन-सहन को तथा सूचना तंत्र को इंटरनेट किस प्रकार प्रभावित करता है इसके संबंध में विशेषज्ञ मुकुल व्यास कहते है "सूचना महामार्ग में एक ऐसे विश्व की कल्पना की गई है जिसमें कंप्युटर, टेलीफोन और संचार उपग्रह प्रणालियों को एक-दूसरे से जोड़ दिया जाएगा तथा किसी भी विषय की जानकारी बटन दबाते ही टी.वी के परदे पर उपलब्ध हो जाएगी। इस विश्वव्यापी संचार प्रणाली की परिकल्पना के साकार होने पर सूचनाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर अत्यंत तेज रफ्तार से पहुँचेगी।" **चंद्रकांत सरदाना, कृषि, वेरला - जनसंचार कल, आज और कल** पृ.111, 112

इंटरनेट का मूल आधार संगणक पाश्चात्य अनुसंधान का आविष्कार होने के कारण इसकी प्रमुख भाषा अंग्रेजी रही है। संगणक की उपयोगिता जैसे-जैसे बढ़ती गई वैसे-वैसे प्रत्येक राष्ट्र उसे अपनाने लगा। इसी बढ़ती गति का परिणाम भारत में भी दिखाई देता है। भारत पिछले दो-तीन दशकों से इस संगणक के प्रयोग पर अधिक बल दे रहा है। संगणक की उपयुक्तता तो संदेह से परे है परंतु वास्तव रूप में भारत बहुभाषी देश होने के कारण अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की मर्यादा दिखाई देती है। जिसप्रकार रूस, जापान, फ्रान्स, चीन, जर्मनी आदि देशों ने अपनी भाषा में संगणक को विकसित किया। वहीं बात भारत ने भी स्विकार की परंतु भारत बहुभाषी देश होने के कारण किस भाषा को अपनाया जाए इसकी समस्या यहाँ निर्माण हुई। अमेरिकी विद्वान रिक ब्रिग्ज ने संगणक प्रोग्राम के लिए सबसे अधिक आदर्श भाषा 'संस्कृत भाषा' को घोषित किया। **मीडिया कालीन हिन्दी : स्वरूप एवं संभावनाएँ – डॉ.अर्जुन चव्हाण,** पृ. 195 संस्कृत भाषा बहुत ही कठिण है और भारत बहुभाषी देश है ऐसे में भारत में संगणक का विकास करना है तो ऐसी भाषा को अपनाना जरूरी था जो देशभर में संगणक विकास को प्रोत्साहन दे सकें। तब भारत ने उस भाषा को संगणक की भाषा के रूप में स्विकार किया जो भारत की राष्ट्रभाषा है और भारत में संगणक की भाषा निश्चित हुई हिंदी भाषा।

यही बात जब इंटरनेट के संबंध में भी सामने आयी तब भारतीय लोगों द्वारा इंटरनेट की भाषा हिंदी बनाने को लेकर प्रयास शुरू हुए। हिंदी भाषा की अपनी एक लिपि है जो रोमन भाषा से अलग है। इस हिंदी भाषा को इंटरनेट की भाषा के रूप में स्विकार करना इतना आसान नहीं था। हिंदी भाषा जब इंटरनेट की तकनीकी दुविधा बन गई तब रोमन लिपि सखी बनकर हिंदी भाषा की सहायक बनी और फिर रोमन भाषा हिंदी भाषा को इंटरनेट के मंचपर ले आयी। और वहीं से हिंदी भाषा सामग्री की इमेज फाइल बनकर वेबसाइटों पर लगना शुरू हो गया। इसका परिणाम आगे चलकर यह हुआ कि, हिंदी भाषा की सामग्री इंटरनेट की भाषा बनकर विकसित होने लगी। 200 से अधिक देशों में फैले नेटवर्कों से जुड़ने के बाद इक्कीसवीं सदीं में इस संचार माध्यमों के क्षेत्र में ले आए इस क्रांति का महानायक इंटरनेट जब भारत से जुड़ने की बात को सोचने लगा तो उसे यहाँ के 125 करोड आबादी वाले देश में सबसे अधिक बोली जानेवाली तादात से जुड़ना आवश्यक हो गया। तब भारत मे सत्तर प्रतिशत से भी अधिक लोगों तक किसी न किसी रूप में हिंदी पहुँच चुकी है। ऐसी स्थिति में भारत सत्तर प्रतिशत से भी अधिक हिंदी भाषा में अभिव्यक्त होता है यह बात सामने आयी। इसी बात को संतोषजनक मानकर ही विकसित देशों में हिंदी के प्रति की जिज्ञासा बढ़ने लगी। बहुराष्ट्रीय कंपनीयां आम

AMRJ
E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
May 2022 Special Issue 05 Volume IV SJIF Impact- 5.54

आदमी तक पहुँचना चाहती है। इसलिए इन कंपनियों ने हिंदी को अपनाया और उसका परिणाम यह हुआ कि पचास से अधिक देशों के पांच सौ से भी अधिक केंद्रों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। आज के आधुनिक युग में हिंदी भाषा एक सौ चालीस देशों में हिंदी किसी न किसी रूप में पहुँच गई है। हिंदी भाषा व्यवसाय की भाषा बनने के कारण ही संपूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति की ओर भी आकर्षित हो रहा है। लोग अपना अधिकाधिक समय इंटरनेट पर लगा रहे हैं। इस कारण उसपर उपभोक्ता वस्तुओंके विज्ञापनों की तादाद भी बढ़ती जा रही है। उत्तर आधुनिक मिडिया तकनीक – हर्षदेव पृ.51 इससे यही कह सकते है कि इंटरनेट हिंदी का प्रचार प्रसार करने में बहुत ही अहं भूमिका निभा रहा है।

ज्ञान संचार के क्षेत्र में इंटरनेट के दिन-प्रतिदिन बढती लोकप्रियता को जब हम देखते है तो पता चल जाता है के आज देशभर में जहाँ टेलीफोन बूथों की जगह जहाँ-तहाँ साइबर केफे खुलते नजर आ रहे हैं। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी में 40% से भी अधिक वृद्धी हुई है। 8,50,000 प्रशिक्षित लोगों में से 6,50,000 लोग भारत में तथा शेष संसार के विभिन्न 85 देशों में कार्य कर रहे हैं। 1,00,000 ऐसी प्रशिक्षित प्रतिभाएँ भी है. जो व्यावसायिक विकास या विभिन्न उपक्रमों से जुड़कर विभिन्न देशों में आती-जाती रहती है। **प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. रमेश तरुण** इसी का परिणाम है कि जब 2000 में हिंदी का पहला वेबपोर्टल अस्तित्व में आया तभी से इंटरनेट पर हिंदी को अपनाना आरंभ हुआ। इंटरनेट से हिंदी का विकास दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है। हिंदी को इंटरनेट पर अपना नया जीवन प्रदान करने में युनीकोड, मंगल जैसे यूनीवर्सल फॉन्टों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। इन्हीं फॉन्टो के कारण ही आज इंटरनेट पर समाचार पत्र, हिंदी साहित्य और हिंदी साहित्य से संबंधित लगभग सत्तर से अधिक इ-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है।

भारत सरकार की नयी निति की घोषणा से यह बात तो निश्चित हो जाती है कि, इंटरनेट सेवा शहरों तक सीमित न रहकर गाँव-गाँव तक यह सुविधा उपलब्ध कराने की है। इंटरनेट द्वारा अपनी खोज को कहीं से भी आरम्भ किया जा सकता है तथा तब तक पहुँचा जा सकता है। पहले कहा जाता था कि 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि' इस उक्ति को भी इंटरनेट ने पीछे छोड दिया है। मनचाही जगह पहुंचना हो या मनचाही जिज्ञासा की शान्ती इंटरनेट करता है। **पत्रकारिता : विविध विधाएँ - डॉ.राजकुमारी रानी** पृ.258-259 आज आवशयक सभी वेबसाईटों के संस्करण हिंदी में मौजूद है। पूंजी बाजार नियामक सेबी, बीएसई, एनएसई, भारतीय जीवन बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, भारतीय लघु विकास उद्योग बैंक की वेबसाइटें हिंदी में भी उपलब्ध है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरों) की वेबसाइट भी हिंदी में है। जुलाई 2009 में दिया गया रिजर्व बैंक का यह निर्देश महत्त्वपूर्ण है कि हिंदी में लिखे पत्र का जवाब हिंदी में देना जरूरी है। यही कारण है कि, सरकारी सभी कार्यालयों में हिंदी अधिकारी या हिंदी अनुवादकों की नियुक्ति की जा रही है। सरकारी उपक्रमों में हिंदी को प्रथम भाषा के रूप में अनिवार्य कर दिया गया है। हिंदी के पंद्रह से भी अधिक सर्च इंजिन है। इटरनेट का ही परिणाम है कंप्यूटर से निकली हिंदी मोबाइल तक सिमित न रहकर आज वह याहू, गुगल और फेसबुक तक की भाषा बन गई है। हिंदी के विकास में इंटरनेट की भूमिका इस कारण भी महत्त्वपूर्ण कि, आज के आधुनिक युग में हिंदी इंटरनेट के कारण ट्विटर पर बाढ़ की तरह उपयुक्त हो रही है। इक्कीसवी सदी के विकसित, विकसनशील, अविकसित देशों को एक दूसरे के निकट लाना है तो इंटरनेट आवश्यक है। शिक्षा, अनुसंधान, मनोरंजन, व्यापार, चर्चा, विचार-विनिमय, बातें, संवाद, समाचार, ग्रंथ, कोश, वैदयकीय उपचार, तंत्रज्ञान, भूगोल, इतिहास, साहित्य आदि का विकसित रूप अगर देखना है तो वह इंटरनेट के माध्यम से ही संभव है। इंटरनेट जागतिक संबंध प्रस्थापित करने वाला व्यापक महाजाल है। **प्रयोजनमूलक हिंदी स्वरूप एवं व्याप्ति - प्रा.सौ.शैलजा रमेश पाटील पृ.154** इस महाबात को अगर भारत में और अधिक विकसित करना है तो हिंदी भाषा एक मजबूत पक्ष है। हिंदी को बाजार की भाषा बनाने का श्रेय भी इंटरनेट को ही जाता है। हिंदी भाषा में वेब सिरीज का हो वहा प्रसारण, इंटरनेट के माध्यम से विकसित हो रहा हिंदी साहित्य, इंटरनेट पर हिंदी में हो विज्ञापन का प्रसारण, इंटरनेट के द्वारा हिंदी भाषी लोगों को हिंदी भाषा में मिल रही सुविधा, इंटरनेट पर हिंदी भाषा की हो रही उपयोगिता, इंटरनेट पर हिंदी भाषा में हो रहा कार्य आदि के कारण ही हिंदी भाषा संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के प्रयास में है। हिंदी भाषा में हो रहा काम, हिंदी भाषा की बढती आवश्यता, हिंदी भाषा बोलने वालो की बढती संख्या आदि में इंटरनेट की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण रही है जिसे नकारा नहीं जा सकता। इंटरनेट पर हिंदी भाषा की लोकप्रियता का अंदाजा इससे भी लगा सकते है कि, हर साल इंटरनेट पर हिंदी पढ़नेवालों की संख्या 94 फीसदी बढ़ रही है। हिन्दी वेबसाइट्स हिंदी भाषा की बेहतरीन सामग्री प्रकाशित कर रही है जो अंग्रेजी से कहीपर भी कम नहीं है। इससे यहां कह सकते है कि, हिंदी भाषा विकास में इंटरनेट यह एक मील का पत्थर साबित हो रहा है। या यह कहें कि हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण रही है।

□ □ □